| Fragment D Paris \rightarrow 2. Kolumne: Luk 6,10-16 = 88. Blatt S. 176 Kol. 2 des Codex Beginn der Kolumne korrekt | | |
|---|--|----|
| 01 | ΕΙΠΕΝ ΑΥΤΩ· ΕΚΤΕΙ- | 13 |
| 02 | NON THN XEIPA ΣΟΥ | 14 |
| 03 | Ο ΔΕ [ε]ΠΟΙΗΣΕΝ ΚΑΙ | 14 |
| 04 | ΑΠΟΚΑΤΕΣΤΑΘΗ Η | 13 |
| 05 | XEIP AΥΤΟΥ· 6,11 ΑΥΤΟΙ ΔΕ | 16 |
| 06 | ΕΠΛΗΣΘΗΣΑΝ ΑΝΟι- | 14 |
| 07 | ΑΣ· ΚΑΙ ΕΛΑΛΟΥΝ Π[ρος | 16 |
| 08 | ΑΛΛΗΛΟΥΣ ΤΙ ΑΝ [ποι- | 15 |
| 09 | HΣΑΙΕΝ ΤΩ $\overline{\text{IY}}$: 12 ε[γ]ε- | 13 |
| 10 1 | NETO ΔE EN TAIΣ HME- | 15 |
| 11 | ΡΑΙΣ ΤΑΥΤΑΙΣ ΕΞΕΛ- | 15 |
| 12 | ΘΕΙΝ ΑΥΤΟΝ ΕΙΣ Τ[ο | 14 |
| 13 | ΟΡΟΣ ΠΡΟΣΕΥΞΑΣ[θαι | 16 |
| 14 | ΚΑΙ ΗΝ ΔΙανυκτε- | 13 |
| 15 | ρευων εν τη προσ- | 13 |
| 16 | EYXH TOY \(\overline{\text{O}}\)Y \(^{13}\)KAI [o- | 13 |
| 17 | ΤΕ ΕΓΕΝΕΤΟ ΗΜΕΡ[α | 14 |
| 18 | ΠΡΟΣΕΦΩ[νησεν | 12 |